उन्नीसवीं शताब्दी के राष्ट्रवादियों जैसे बंकिमचन्द्र ने इतिहास की आवश्यकता सिद्ध की, वास्तव में उन्होंने इस आधुनिक, बुद्धिवादी प्रकार के इतिहास की आवश्यकता पर जोर दिया। इसलिए दृष्टान्त के बारे में कुछ अन्य सोचना उचित है। कविराज के दावा में भारत के इतिहास में सातवाहन या सिन्धु घाटी सभ्यता के इतिहास के समावेशन में कुछ विदेशीपन शामिल है। या वर्तमान भौगोलिक सीमाओं के आधार पर क्या हम तब सिन्धु घाटी सभ्यता और मोहनजोदड़ो का दावा कर सकते हैं क्योंकि वे इस समय पाकिस्तान में हैं? दूसरे शब्दो में, सम्पूर्ण पिछले इतिहास को वर्तमान भारत के राष्ट्रीय इतिहास के भाग के रूप में दावा करने का प्रयास किस प्रकार तर्क संगत है?

अब यह तथ्य है कि "उन्नीसवीं शताब्दी से पहले 'हमारे पास कोई इतिहास नहीं था" इसका अभिप्राय यह नहीं समझा जाना चाहिए कि 'हम' में अतीत से कोई भावना या संबंध नहीं था। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों के राष्ट्रवादियों ने भी इसे हमारे पिछड़ेपन के चिह्न या "कर्मों" के रूप में देखा जिसने यह सिद्ध किया कि हम आधुनिक नहीं थे। यहाँ एक महत्वपूर्ण दृष्टान्त ध्यान में रखा जाना चाहिए। एक तरीका जिसमें पश्च संरचनावाद ने पश्चिमी संरचनावाद की सहज बुद्धि ने यह प्रश्न किया कि एकमात्र और रेखीय विकास के रूप में "मानव इतिहास" की उसकी धारणा को चुनौती देकर ज्ञानोदय हुआ है। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि निचले स्तर से उच्चतर स्तर में प्रगति की कहानी के रूप में मानव इतिहास की कहानी आधुनिक ऐतिहासिक चेतना का आधार रही है। संरचनावाद-पश्च ने अन्य बातों के साथ-साथ इस विचार को चुनौती दी कि अतीत के बारे में केवल एक ही तरीका हो सकता है और वह है, ऐतिहासिक तरीका। फिर प्रश्न यह नहीं है कि हम यहाँ विस्तार से चर्चा करें बल्कि यह ध्यान रखना उपयोगी है कि इस प्रकार की ऐतिहासिक आत्मचेतना आधुनिक परिकलित समुदायों की विशेषता है जो लगातार अपनी और अन्य के संबंध में सामूहिक स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता महसूस करते हैं। यदि आधुनिक पूर्व समुदाय अपने अतीत के बारे में कोई तर्क सम्मत जानकारी देना आवश्यक नहीं समझते हैं तो इसका केवल मात्र कारण हैं कि विश्व उनके अस्तित्व के तौर तरीके ऐसे हैं कि वे क्या हैं, यह दिखाना आवश्यक नहीं मानते हैं। इस प्रकार के समुदायों में समय की धारणा काल्पनिक काल और जीवनकाल के बीच को स्पष्ट अंतर नहीं करते हैं। कई तरीकों में एक तरीके का इतिहास और ऐतिहासिक काल की इस समझ को उपनिवेशों में जीवन प्रभावित किया है, यह अभी प्रभावित कर रहा है, वह सभी समाजों के खास ऐतिहासिक यात्रा प्रारम्भ करता है, जैसे कि वे एक ही सत्व हो। उस कहानी में यूरोप ऐसा स्थान प्रतीत होता है जहाँ इतिहास है, क्योंकि यह प्रगति के मानदंड में सबसे आगे हैं। तब सभी समाजों ने अपने आधार पर यूरोपीय इतिहास का प्रतिदान किया। उपर्युक्त कार्यों से एक शिक्षा यह है कि हमें अपना इतिहास स्वयं लिखना शुरू करना चाहिए न कि यूरोप को अस्वीकृत कर, बल्कि इसे और इसके इतिहास को नकारते हुए सार्वदेशिक प्रस्थिति को स्वीकार करना चाहिए जिसे इसने अर्जित किया है।

2.5 सारांश

इस इकाई में प्राच्यवाद (आरंभिक चिंतन) की अवधारणा और आधुनिकता के प्रश्न तथा भारत में इसकी औपनिवेशिक जड़ों पर चर्चा की गई है। यह अब तुलनात्मक रूप में विफल अध्ययन है और पूर्व उपनिवेशों तथा उनके मूलभूत उपनिवेशी मालिकों दोनों के लिए नई और गहरी जानकारी प्रदान की है। उदाहरण के लिए, यह विचार कि अकेला यूरोप का इतिहास संदर्भ का विषय नहीं हो सकता है जब पिछले उपनिवेशों के इतिहास लिखे जा रहे हों।

इकाई में विषय पर भिन्न भिन्न विचारधाराओं के विद्वानों की चर्चा का उल्लेख है। नव गांधीवादी विचारधारा पराश्रित अध्ययन विचारधारा, संयुक्त राज्य आधारित मानव वैज्ञानिक अध्ययन और एडवर्ड सईद के प्राच्यवाद में चार श्रेणियाँ हैं जिनका विश्लेषण किया गया है। एक अगला प्रयास राष्ट्रवाद और